P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-VIII* January- 2016

ग्रामांचल के कृषि वैज्ञानिक : घाघ

हेमांशु सेन
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

'घाघ' पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक ऐसे लोक कवि हैं, जिनकी कोई लिखित रचना उपलब्ध नहीं है परन्तु जो उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश समेत लगभग उत्तर भारत के लोक में रच–बसे है, जिनकी कहावतें हर खेतिहर की वो अनमोल थाती है जिसके लिये न तो बिजली की जरूरत, न विज्ञान की, न पैसों की जरूरत है और न पुस्तकीय ज्ञान की। वहतो बस घाघ की कहावतों को याद करता है, उसी के अनुसार खेती करने की योजना बनाता है और अपना कार्य करता है। आज घाघ की कहावतों को नये सिरे से विश्लेषित करने की आवश्यकता है। खगोल विज्ञान, भूविज्ञान, मौसम विज्ञान से जुड़े वैज्ञानिकों को खालिस मिट्टी से जुड़े घाघ की इन कहावतों की प्रामाणिकता, और यथार्थता का वैज्ञानिक विवेचन करना होगा, क्योंकि विज्ञान माने या न माने किसानों के वैज्ञानिक तो महाकवि घाघ ही हैं। इस अनमोल रत्न की ज्ञान काँति न केवल किसान अपितु सम्पूर्ण उत्तर भारतीय जन–जीवन को अपने व्यावहारिकता से ओत–प्रोत कर करती हैं। इसमें संदेह नहीं कि यदि घाघ की कहावतों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाय तो सम्पूर्ण विश्व, भारत के इस प्राचीन मौसम और कृषि वैज्ञानिक की इन कहावतों की वैज्ञानिकता का कायल हो जायेगा और विश्वपटल पर भारत की पारम्परिक ज्ञान–विज्ञान की एक और सार्थक, प्रामाणिक और अमिटछाप अंकित हो जायेगी।

मुख्य शब्द : खेतिहर, किसान, चिरैया, चित्रा, असलेखा, अश्लेषा।

प्रस्तावना

'घाघ' पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक ऐसे लोक कवि हैं, जिनकी कोई लिखित रचना उपलब्ध नहीं है परन्तु जो उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश समेत लगभग उत्तर भारत के लोक में रच–बस ह, जिनकी कहावतें हर खेतिहर की वो अनमोल थाती है जिसके लिये न तो बिजली की जरूरत, न विज्ञान की, न पैसों की जरूरत है और न पुस्तकीय ज्ञान की। वह तो बस घाघ की कहावतों को याद करता है, उसी के अनुसार खेती करने की योजना बनाता है और अपना कार्य करता है।

सुखद आश्चर्य होता है कि अकबर के समकालीन महाकवि घाघ को उस समय के मौसम विज्ञान का कितना सटीक और सही ज्ञान था। भारत में ज्योतिष शास्त्र, नक्षत्र, खगोल और अंतरिक्ष ज्ञान का, विश्लेषण बहुत वैज्ञानिक रूप से किया गया है इन शास्त्रों का यथार्थ ज्ञान और व्यावहारिक प्रयोग सामान्य जन के लिये बहुत लाभदायक हो सकता है, घाघ की कहावतें इस तथ्य को बहुत प्रामाणिक रूप से सिद्ध करती हैं।

आज भी गाँवों का किसान मौसम का हाल–रेडियो, टी0वी0 और अखबार से पा जाये तो ठीक परन्तु उसके पारम्परिक स्रोत 'घाघ' हर पल, हर वक्त उसके साथ हैं। जिनके ज्ञान के लिए इसे बिजली, बैटरी अथवा किसी बाहरी यांत्रिक सहयोग की आवश्यकता नहीं होती वो तो पीढ़ियों से उनके जानकारी देता आया है, सावधान करता आया है। घाघ की कहावतें उनके नाम के समान ही चतुराई से भरी होती हैं। ज्ञान शब्द कोश के अनुसार 'घाघ' का अर्थ होता है–''भोजपुरी बोली के एक कवि जिनकी कृषिकर्म नीति आदि विषय की कहावतें बहुत प्रसिद्ध हैं, बहुत चालाक आदमी, काइयाँ, जादूगर।[1]

'घाघ' शब्द का अर्थ जैसा है वैसे ही उनकी कहावतें भी चतुराई से भरी होती है, किसानों की उम्मीदों पर शत–प्रतिशत खरी उतरती हैं। घाघ पर इस समय तक अनेक पुस्तकें सम्पादित हो चुकी हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ0 श्याम सुन्दर दास ने अपनी पुस्तकों में इनका उल्लेख किया है तथा पं0 राम नरेश त्रिपाठी, राय बहादुर मुकुन्द गुप्त 'विशारद', श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह सरीखे अनेक रचनाकारा ने इनकी कहावतों इनकी कहावतों का संकलन किया है। डॉ0 ग्रियर्सन ने 'पीजेन्ट लाइफ ऑफ बिहार' में घाघ की कविताओं का भोजपुरी पाठ किया है। बावजूद इसके घाघ की कहावतें लोक की ही सम्पत्ति हैं, लोक से ही उनका ज्ञान प्राप्त होता है। 'भारतीय संस्कृति कोष' मे घाघ का

परिचय देते हुए लिखा गया ह – ''उत्तर भारत में खेती सम्बंधी कहावतों के लिए प्रसिद्ध घाघ अकबर के शासन काल में थे इनका जन्म कन्नौज के पास चौधरी सराय नामक गाँव में एक दूबे ब्राह्मण परिवार में हुआ था इनकी कही हुई कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध हैं ये कहावतें खेती–बारी, ऋतु काल, तथा लग्न मुर्हूत आदि के सम्बंध में है।''[2]

घाघ की जीवन वृत्त लिखते हुए डॉ0 रमेश प्रताप सिंह ने इतिहास ग्रन्थों में उनकी उपस्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है–''हिंदी साहित्य के इतिहास गन्थों में घाघ के संबंध में सर्वप्रथम 'शिवसिंह सरोज' में उल्लेख मिलता है।''[3]

श्री देव नारायण द्विवेदी जी ने इनके जन्म के सम्बन्ध में लिखते है ''कुछ लोगों का मत है कि घाघ का जन्म संवत् 1753 ई0 में कानपुर जिले में हुआ था। मिश्र बन्धु ने इन्हें कान्यकुब्ज बाह्मण माना है पर यह बात केवल कल्पना प्रसून है।[4]

'घाघ' की कहावतों को विद्वानों ने अनेक वर्गों में वर्गीकृत किया है। राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर (भोपाल) से प्रकाशित 'घाघ की कहावतें' पुस्तक के संपादक श्री वीरेन्द्र तंवर ने इनकी कहावतों को पाँच वर्गों में विभक्त किया है–

1. मास विचार
2. वर्षा नक्षत्र विचार
3. वर्षा के विषय में अन्य विचार
4. जुताई
5. खाद[5]

हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''घाघ और भड्डरी की कहावतें'' के संपादक डॉ0 आर0पी0 सिंह ने घाघ की कहावतों के 20 वर्ग किए हैं–जिनमें क्रम से– वर्षा, अकाल, खेती, किसान, वायुज्ञान, जुताई, बोवाई, सिंचाई, खाद, निराई, गुड़ाई, फसल रोग, खेत रक्षा, कटाई संबंधीं, मड़ाई संबंधी, पैदावार संबंधी, पशु संबंधी, नीति संबंधी, ज्योतिष संबंधी, शुभाशुभ संबंधी और स्वास्थ्य संबंधी कहावतें आती हैं।[6]

मास विचार हो अथवा नक्षत्र विचार या खेती संबंधी अन्य विचार घाघ की कहावतें व्यावहारिक जीवन में अत्यंत प्रामाणिक सिद्ध होती हैं। जीवन और कृषि ज्ञान के संबंध में कहीं गयी उनकी कहावतें, उनके व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित हैं। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक घटना, प्रत्येक कारण का बहत गहरा अनुमान और विश्लेषण करने के पश्चात ही इतनी प्रमाणिक कहावतें कही जा सकती हैं जो युगों तक अपनी प्रासंगिकता और वैज्ञानिकता सिद्ध करती रहें। कवि घाघ की कहावतें नक्षत्र, ज्योतिष पर आधारित हैं परन्तु तदनुरूप कर्म की प्रेरणा देती हैं। हाथ पर हाथ रखकर खती किसानी नहीं की जा सकती। परम्परा, नक्षत्र, ग्रह और ज्योतिष के उद्भट ज्ञाता घाघ स्पष्ट कहते हैं –

'बाढ़ै पूत पिता के धर्म, खेती उपजै अपने कर्मे'

किसान किस प्रकार से उत्कृष्ट खेती कर सकता है घाघ की कहावत इसका क्रमवार विश्लेषण करती हैं। खेती का पहला चरण 'जुताई' होती है। उत्तम खेती के लिए कैसी जुताई होनी चाहिए 'घाघ' के अनुसार–

मेड़ बाँध दस जोतन देय।
दस मन बिगहा मोसे लेय[8]

अर्थात मेड़ बनाकर जो दस बार खेत में जुताई करेगा तब दस मन धान प्रति बीघा के हिसाब से अवश्य पैदवार होगी।

छोटी नसी, धरती हंसी
हर लागा पाताल, टूट गया काल।[09]

हल की छोटी फाल देखकर धरती हंसने लगती है, गहरी जुताई हो तो उपज अधिक होगी और अकाल समाप्त हो जाएगा।

यदि किसी ने अच्छी जुताई नहीं कि तो घाघ के अनुसार–

थोड़ा जताई बहुत हेंगाई, ऊँचै बाँधे आरी
उपजै तो उपजै नहीं, घाघै देवै गारी।[10]

अर्थात थोड़ी जुताई की और आधी–हेंगाई की, ऊँची खेत की मेड़ बाँध दी तो जो पैदा होने वाला है वह भी पैदा नहीं हो पाएगा।

इस प्रकार कृषि के प्रारम्भिक चरण जुताई से प्रारम्भ कर घाघ ने बीज बुवाई, सिंचाई निराई, गुड़ाई, कटाई आदि के संबंध में उचित–अनुचित, करणीय–अकरणीय सबका सम्यक विवरण प्रस्तुत किया है। कृषि संबंधी उनकी सामान्य कहावतें भी हैं वही विशिष्ट खेती के लिए अलग से कहावतें हैं। जैसे सामान्य रूप से अच्छी खेती के लिए घाघ कहते हैं–

जितना गहरा जोतै खेत।
बीज परै फल अच्छा देत।[11]

वहीं धान की खेती के लिए उनकी कहावत है–

गहिर न जौते बौवे धान।
सो घर कोठिला भरै किसान।[12]

धान की बुवाई करने के लिए कम गहरा खेत जोतना चाहिए। ऐसा करने से किसान का कोठिला (गोदाम) भर जाता है।

किसान को कौन सी फसल के लिए किस तरह की जुताई करनी चाहिए, कितनी गहराई में बीज डालना चाहिए, घाघ अपनी कहावतों के माध्यम से पूरा ज्ञान देते हैं

मैदे गेहूँ। ढ़ेल चना[13]

खेत की जुताई में मिट्टी एकदम महीन हो जाए तो गेह् के लिए उत्तम होती है और ढ़ेले वाला खेत चना के लिए उत्तम होता है। इसी प्रकार घाघ ने गेहूँ, धान, मक्का, चना, अलसी आदि फसलों के लिए खेत तैयार करने का तरीका, अपनी कहावतों के माध्यम से किसान को बताया है।

उत्कृष्ट खेती के लिए किसान को कौन से प्रयास करने चाहिए इस संबंध में घाघ का मत है–

गेहूँ बाहे, चना दलाये
धान गाहे, मक्की निराये[14]

गेहूँ अनेक बार जोतने से, चना दबाने से, धान गहाने से और मक्का निराने से उत्तम पैदावार होती है।

अच्छी खेती के लिए कौन सा बीज किस महीने में और कौन से नक्षत्र में बोया जाय यह भी घाघ कहावतों के माध्यम से बताते हैं। अनपढ़ किसान भी घाघ के नक्षत्रों, सिंचाई, वर्षा और बुवाई संबंधी कहावतों का ध्यान रखता है–

चिरैया की चीर फार
असलेखा की हार टार
मघा की काँदों सार[15]

अर्थात चित्रा नक्षत्र में थोड़ा जुताई कर धान बोये, अश्लेषा में ढेलों को हटाकर धान बोये, मघा में खेत की अच्छी तरह जुताई कर के ही धान बोना चाहिए।

इनकी ऐसी अनेक कहावते हैं जो खेत और बीज के लिए हैं। कृषि के क्षेत्र में खाद की क्या उपयोगिता है? कितनी जरूरत है? यह भी घाघ ने अपनी कहावतों के माध्यम से वर्णित किया है। खेतों में किसान कौन सी खाद डालें और उसका लाभ क्या होगा इसका वर्णन करते हुए घाघ खुले शब्दों में कहते हैं–

खाद परै तो खेत। नाहीं तो कूड़ा रेत[16]
खेती करै खाद से भरै। सो अन कोठिला में लै धरे।[17]

खाद के प्रकार बताते हुए घाघ कहते हैं–

गोबर मैला पानी सड़ै, तब खेती में दाना पड़ै।[18]
गोबर मैला नीम की फली इनसे खेती दूनी फली[19]
जो तुम देऊ नील की जूठी। सब खादों में रहे अनूठी[20]

इसी प्रकार बुवाई, कटाई के दिन और नक्षत्र का विचार भी घाघ ने अपनी कहावतों में किया है–

बुध बउनी, सुक लउनी।[21]
पुक्ख पुनर्वज बौवे धान।
असलेखा जो–हरी परमान।[22]

घाघ ने किसान के जीवन से जुड़े पशुओं–बैल और गाय आदि पर भी कहावतें कही हैं। किस तरह का बैल और गाय उत्तम है इसके सम्बन्ध में उनकी अनेक कहावतें हैं जैसे–

बैल लीजै कजरा, दाम दीजै अगरा।[23]
बड़सिंगा जीन लीजौं मोल
कुएं में डारों रूपिया खोल।[24]

जुताई, बुवाई, के पश्चात और पूर्व किसान को खेत में सिंचाई की आवश्यकता होती है। घाघ की कहावतें इस दिशा में किसान के लिए सहायक होती हैं। प्राचीन समय में किसान सिंचाई के लिए प्रायः वर्षा पर निर्भर रहता था। उसकी खेती वर्षा के होने न होने, ज्यादा होने अथवा कम होने पर पूर्णतया निर्भर करती थीं। इन सभी स्थितियों के लिए घाघ ने प्रामाणिक कहावतें कहीं है। घाघ के वर्षा संबंधी कहावतों के दो वर्ग किये जा सकते हैं–

1. वर्षा होने वाली कहावतें
2. वषा न होने वाली कहावतें

वर्षा संबंधी कहावतें–

एक बूँद जो चैत में परे। सहस बूँद सावन में हरै[25]
सावन केरे प्रथम दिन, उगत न दीखै भान
चार महीना वरसै पानी, याको है प्रमान[26]
जेठ माह जो तपै निरासा, तो जानो बरखा की आसा[27]

अकाल, सूखा संबंधी कहावतें–

सुदि असाढ़ में बुध को उदय भयो जो देख
सुक्र अस्त सावन लखो महाकाल अवरेख[28]

अर्थात यदि आषाढ़ शुक्ल पक्ष में बुध उदय हो और सावन में शुक्रास्त हो तो घोर अकाल पड़ेगा।

किस नक्षत्र की वर्षा खेती के लिए लाभदायक होती और कौन सी नुकसानदायक?– घाघ की कहावतें इसका भी पूरा विवरण प्रस्तुत करती है। नक्षत्रों के अनुसार दिया गया उनका ज्ञान उत्तर भारतीय किसानों के लिए अचूक और प्रामाणिक ज्ञान है

एक पानी जो बरसै स्वाती
कुरमिन पहिरै सोने के पानी[29]
चढ़त जो बरसै चित्ररा, उतरत बरसै हस्त
कितनौं राजा डॉउ ले, हारे न गिरहस्त[30]

वर्षा संबंधी घाघ की कहावतें आज के वैज्ञानिकों के लिए भी चुनौती हैं। घाघ मौसम आकाश और बादल के अनुरूप वर्षा का अनुमान लगा देते हैं। आश्चर्य होता है परन्तु उनकी कहावत सत्य की कसौटी पर प्रायः खरे उतरते हैं–

करिया बादर जिउ डेरवाय
धंवरे बादल पानी लावै।[31]
लाल पियर जब होय अकास
तब नाहीं बरखा की आस।[32]
दिन के बद्दर रात निबद्दर
बहै पुरवइया झब्बर झब्बर
कहै घाघ कुछ होनी होई,
कुआँ के पानी से धोबी धोई।[33]
पहले पानी नदी उफनॉय
तो जानियों की वरखा नाय[34]

घाघ की कुछ कहावतें पूर्वांचल के ग्रामीण समाज में बहुत लोकप्रिय हैं इतनी कि बच्चे खेलते हुए गाते हैं–

'तरकारी हो तरकारी जिस में पानी की अधिकारी'[35]

यद्यपि आज 'घाघ की कहावतें' पढ़े–लिखें समाज में लोगों के याद नहीं हैं। परन्तु वर्षा, अकाल, सूखा, बाढ़ संबंधी घाघ की कहावत न केवल किसानों अपितु सामान्य रूप से सभी के लिए बहुत उपयोगी होती हैं। उनकी नीति, ज्योतिष, शुभाशुभ, स्वास्थ्य संबंधी कहावतों की सामाजिक उपादेयता बहुत अधिक है। आज घाघ की कहावतों को नये सिरे से विश्लेषित करने की आवश्यकता है। खगोल विज्ञान, भूविज्ञान, मौसम विज्ञान से जुड़े वैज्ञानिकों को खालिस मिट्टी से जुड़े घाघ की इन कहावतों की प्रामाणिकता, और यथार्थता का वैज्ञानिक विवेचन करना होगा, क्योंकि विज्ञान माने या न माने किसानों के वैज्ञानिक तो महाकवि घाघ ही हैं। इस अनमोल रत्न की ज्ञान काँति न केवल किसान अपितु सम्पूर्ण उत्तर भारतीय जन–जीवन को अपने व्यावहारिकता से ओत–प्रोत कर करती हैं। इसमें संदेह नहीं कि यदि घाघ की कहावतों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाय तो सम्पूर्ण विश्व, प्राचीन भारत के इस मौसम और कृषि वैज्ञानिक की इन कहावतों की वैज्ञानिकता का कायल हो जायेगा और विश्व पटल पर भारत की पारम्परिक ज्ञान–विज्ञान की एक और सार्थक, प्रामाणिक और अमिट छाप अंकित हो जायेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संपादक– मुकुन्दी लाल, ज्ञान शब्द कोश, पृष्ठ 227।
2. लीलाधर शर्मा पर्वतीय, भारतीय संस्कृति कोश, पृष्ठ–310–311।
3. संपादक–डॉ0 रमेश प्रताप सिंह, घाघ और भड्डरी की कहावतें, पृष्ठ 4।
4. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, भूमिका।
5. संपादक वीरेन्द्र तंवर, घाघ की कहावत, पृष्ठ–5।
6. संपादक–डॉ0 रमेश प्रताप सिंह ''घाघ और भड्डरी की कहावतें'' अनुक्रम।
7. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–67।

8. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ– 32।
9. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–113।
10. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–31।
11. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–116।
12. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–7।
13. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–34।
14. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–8।
15. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–34।
16. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–114।
17. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–114।
18. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–120।
19. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–120।
20. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–117।
21. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–95।
22. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–94।
23. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–102।
24. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–101।
25. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–53।
26. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–51।
27. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–36।
28. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–56।
29. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–53।
30. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–54।
31. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–38।
32. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–37।
33. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–62।
34. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–63।
35. देवनारायण द्विवेदी, घाघ भड्डरी, पृष्ठ–106।